बुद्धिमान के तीस वचन (कहावतें)

दिन 1
प्रभु पर भरोसा करो

"कान लगाकर बुद्धिमानों के वचन सुन, और मेरी ज्ञान की बातों की ओर मन लगा; यदि तू उसको अपने मन में रखे, और वे सब तेरे मुंह से निकला भी करें, तो यह मनभावनी बात होगी। मैं आज इसलिये वे बातें तुझ को जता देता हूं, कि तेरा भरोसा प्रभु पर हो।" नीतिवचन **22:17-19**

सही बुद्धिमानी हमें परमेश्वर पर कम नहीं परन्तु अधिक से अधिक निर्भर रहने में मदद करती है। हम यह महसूस करते हुए प्रभु पर अपने भरोसे में बढ़ते हैं कि, परमेश्वर के प्रति उचित दृष्टिकोण के द्वारा ही ज्ञान की खोज शुरू होती है और जारी रहती है।

नीतिवचन 16:20 – जो प्रभु पर भरोसा रखता, वह धन्य होता है।
नीतिवचन 28:25 – जो प्रभु पर भरोसा रखता है, वह फूलता–फलता है।
नीतिवचन 29:25 – जो प्रभु पर भरोसा रखता, वह सुरक्षित रहता है।
भजनसंहिता 62:8 – हे लोगों, हर समय उस पर भरोसा रखो; उस से अपने–अपने मन की बातें खोलकर कहो; परमेश्वर हमारा शरणस्थान है।

उपयोग:
"परमेश्वर से अपने मन की बातें खोलकर कहने" का क्या अर्थ है? आज अपने मन की बातें परमेश्वर से खुलकर कहो।

दिन 2
गरीब का शोषण मत करो

"कंगाल पर इस कारण अन्धेर न करना कि वह कंगाल है, और न दीन जन को कचहरी में पीसना; क्योंकि प्रभु उनका मुकद्दमा लड़ेगा, और जो लोग उनका धन हर लेते हैं, उनका प्राण भी वह हर लेगा।" नीतिवचन **22:22-23**

"जो देश तेरा प्रभु परमेश्वर तुझे दे रहा है उसके किसी फाटक के भीतर यदि तेरे जाति भाईयों में से कोई तेरे पास दरिद्र हो, तो अपने उस दरिद्र भाई के लिये न तो अपना हृदय कठार करना, और न अपनी मुट्ठी कड़ी करना।" व्यवस्थाविवरण **15:7**

अक्सर लोग यह सोचते हैं कि गरीबों के पास अपने बचाव के लिये न तो बड़े संसाधन होते हैं और न ही कोई प्रभाव। वचन कहता है प्रभु उनका मुकद्दमा लड़ेंगे और उनका बचाव करेंगे।

नीतिवचन 19:17 – जो कंगाल पर अनुग्रह करता है, वह प्रभु को उधार देता है, और वह अपने इस काम का प्रतिफल पाएगा।

उपयोग:
आज गरीब को याद करो और जैसा बन पड़े वैसे उसकी मदद करो ।

दिन 3
ध्यान रखो कि आप किससे दोस्ती करते हो

"क्रोधी मनुष्य का मित्र न होना, और झट क्रोध करनेवाले के संग न चलना, क्हं ऐसा न हो कि तू उसकी चाल सीखे, और तेरा प्राण फन्दे में फंस जाए।" नीतिवचन **22:24-25**

नीतिवचन 29:11 – मूर्ख मनुष्य बहुत जल्दि क्रोधित हो जाता है, किन्तु बुद्धिमान धीरज धरके अपने पर नियंत्रण रखता है।

नीतिवचन 29:22 – क्रोध करनेवाला मनुष्य झगड़ा मचाता है, और अत्यन्त क्रोध करनेवाला अपराधी भी होता है।

नीतिवचन 19:17 – जो कंगाल पर अनुग्रह करता है, वह प्रभु को उधार देता है, और वह अपने इस काम का प्रतिफल पाएगा।

क्या आप सचमुच में उनकी तरह व्यवहार करके खुद को फंसाना चाहते हो?

1कुरिन्थियों 13:5 – के अनुसार, क्रोध प्रेम की कमी का एक चिन्ह है, 'प्रेम कभी झुँझलाता नहीं'

उपयोग:
आपके बीच में जो क्रोधी लोग हैं उनके बारे में और उनके कामों के बारे में विचार करो। आप ऐसे काम करोगे तो कैसा महसूस करोगे? क्रोध और क्रोधी लोगों से पीछा छुड़ाने के लिये आप कौनसे कदम उठाने की योजना बना रहे हैं?

दिन 4
ध्यान रखो कि आप किससे दोस्ती करते हो

"तू उनके जैसा न बनना जो दूसरों के ऋण की जमानत देने पर सहमत होते हैं। यदि तेरे पास चुकाने के लिये कुछ न हो, तो तुझसे तेरा बिस्तर भी छीन लिया जाएगा।" नीतिवचन **22:26-27**

दूसरों का ऋण चुकाने की ज़िम्मेदारी उठाना बहुत ही खतरनाक बात है। यदि खुद के लिये ऋण लेने से बचना है, तो फिर दूसरों के ऋण की जमानत देने पर सहमत होने से बचना कितना ज़रूरी है।

प्रत्येक मनुष्य को अपने और अपने परिवार के प्रति इमानदार/न्यायप्रत होना चाहिये; जो ऐसे नहीं हैं, वे अपनी मूर्खता या दूसरी लापरवाही के कारण जो कुछ उनके पास है वो सब गंवा देते हैं।

उपयोग:
यदि आप आर्थिक मामलों से जूझ रहे हैं तो किदी ऐसे व्यक्ति से सलाह लें जो आर्थिक मामलों में एक आदर्श है। यदि पैसों के मामले में आप अनुशासित हैं, तो किसी ऐसे व्यक्ति की मदद करने का प्रयास करो जिसके बारे में आपको लगता है कि वह पैसों के मामले में अनुशासित नहीं है।

दिन 5
प्रचीन सीमा चिन्ह को न बढ़ाना

"जो प्राचीन सीमा-चिन्ह तेरे पूर्वजों ने ठहराया है, उसे न बढ़ाना।" नीतिवचन **22:28**

"शापित है वह जो किसी दूसरे की सीमा को हटाए। तब सब लोग कहें, 'आमीन'!" व्यवस्थाविवरण **27:17**

एक सीमा–चिन्ह, एक प्रथा, एक परम्परा या एक मूल्य को हल्के में नहीं लेना चाहिये। हमें यह कभी नहीं समझना चाहिये कि हमारे पुरखाओं ने बुरे कारण या बिना किसी कारण ऐसे ही ये सीमा–चिन्ह स्थापित किये हैं।

यह केवल एक परंपरा है इसलिये हमें उस परम्परा का बचाव नहीं करना चाहिये और न ही परंपरा को नष्ट करने के इरादे से उस परंपरा को नष्ट करना चाहिये।

उपयोग:
इस वचन के अनुसार आपके मन में क्या विचार उत्पन्न हो रहे हैं? उन विचारों के द्वारा प्रार्थना करो।

दिन 6
अपने कौशल को निखारें

"यदि तू ऐसा मनुष्य देखे जो कामकाज में निपुण हो, तो वह राजाओं के सम्मुख खड़ा होगा; छोटे लोगों के सम्मुख नहीं।"
***नीतिवचन* 22:29**

निर्णय, भक्ति और दृढ़ संकल्प यदि इन तीन बातों का हम पालन करें, तो हम भी निपुण हो सकते हैं। किसी क्षेत्र में निपुण होने के लिये; एक व्यक्ति को पहले तो निर्णय लेना चाहिये, फिर उसमें बढ़ने के लिये समय देना चाहिये और फिर उन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये दृढ़ संकल्पित होना चाहिये।

एक स्त्री या पुरूष की उत्कृष्टता उन्हें इस संसार में महान प्रतिष्ठा दिला सकती है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उनकी उत्कृष्टता उन्हें राजाओं के राजा के सामने खड़ा करता है जो उसके प्रति लगन से काम करनेवाले को प्रतिफल देने का वादा करता है।

"जो कुछ तुम करते हो, तन-मन से करो। तुम यह समझकर करो कि मनुष्यों के लिये नहीं, परन्तु प्रभु के लिये तुम करते हो।"
***कुलुस्सियों* 3:23**

उपयोग:
क्या परमेश्वर कहेगा, "धन्य है"? परमेश्वर को अधिक से अधिक प्रभावित करने के लिये कुछ योजनाओं की सूची बनाओ।

दिन 7

यदि आप एक पेटु व्यक्ति हैं, तो थोड़ा खाकर भूखे पेट ही उठ जाना

"*जब तू किसी हाकीम के साथ भोजन करने बैठे, तो इस बात को मन लगाकर सोचना कि मेरे सामने कौन है? और यदि तू खाऊ हो, तो थोड़ा खाकर भूखा उठ जाना। उसकी स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं की लालसा न करना, क्योंकि वह धोखे का भोजन है*"
***नीतिवचन* 23:1-3**

थोड़ा खाकर भूखे पेट ही उठ जाने का अर्थ है खाने के मामले में अपने आप पर नियंत्रण रखना। हमारे सामने क्या भोजनवस्तु परोसा गया है उसके बारे में हमें सावधान रहना है। हर चमकती हुई चीज़ सोना नहीं होती।

विशेष रूप से खान–पान ने लोगों को नियंत्रण खोने पर मजबूर किया है और उन्हें उससे होने वाले अनपेक्षित परिणामों को भुगतना पड़ा है।

"***नए जन्मे हुए बच्चों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।***" **1 पतरस 2:2**

उपयोग:
क्या आपने कभी किसी चीज़ को पाने की लालसा में अपना आपा खोया है? आपको ऐसी बातों से बचाए रखने के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो और सतर्क रहो।

दिन 8
धनी होने के लिये परिश्रम न करना

"धनी होने के लिये परिश्रम न करना; अपनी समझ का भरोसा छोड़ना। क्या तू अपनी दृष्टि उस वस्तु पर लगाएगा , जो है ही नहीं ? यह उकाब पक्षी की नाईं पंख लगाकर , नि:सन्देह आकाश की ओर उड़ जाता है।" नीतिवचन **23:4-5**

हालाँकि कड़ी मेहनत करना बुद्धिमत्ता का प्रतीक है, परन्तु हम उस धन–सम्पत्ती के लिये नहीं जीते जो शायद उस काम से प्राप्त हो। ऐसा धन बहुत जल्द हाथ से निकल जानेवाला और अस्थायी होता है और ऐसा धन इस योग्य नहीं कि हम उसपर जीवन का पूरा ध्यान केन्द्रित करें।

"पर जो धनी होना चाहते हैं, यह ऐसी परीक्षा, जाल–फन्दे तथा अनेक व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती है और विनाश के समुद्र में डुबा देती है। रूपये–पैसे का लोभ सब प्रकार की बुराईयों की जड़ है। उसको प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए अनेक विश्वासी विश्वास के मार्ग से भटक गए, और उन्होंने अपने आपको नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है।"
1 *तीमुथियुस* **6:9-10**

उपयोग:
आओ हम अपने दिलों को जाँचें कि हम जो करते हैं, तो क्यों करते हैं।

दिन 9
कंजूस लोगों के साथ भोजन न करें

"जो डाह से देखता है उसकी रोटी न खाना, और न उसकी स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं की लालसा करना; क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है। वह तुझ से कहता तो है, खा पी, परन्तु उसका मन तुझसे लगा नहीं है। जो कौर तूने खाया हो, उसे उगलना पड़ेगा, और तू अपनी मीठी बातों का फल खोएगा।" नीतिवचन **23:6-8**

वचन 1-3 में अमीरों के जीवनशैली के बारे में एक चेतावनी दी गई थी। अब यह चेतावनी उत्तम भोजन या धन से हटकर भोजन करानेवाले के उद्देश्यों और इरादों की ओर चला गया है।

विलासितापूर्ण जीवनशैली और कपटी मन से किये अतीथि सत्कार इन दोनों बातों से बचना चाहिये। एक दुष्ट व्यक्ति का भोजन निमंत्रण अस्विकार करें जो आपकी खुशी और समृद्धि की बात करने के बजाए अपने ही बुरे महत्वाकांक्षाओं और प्रस्तावों पर अधिक ज़ोर दे।

"मेरा कहना यह है, यदि कोई ऐसा विश्वासी भाई है जो व्यभिचारी, लोभी, मूर्तिपूजक, गाली देनवाला, पियक्कड़, या अन्धेर करनेवाला है तो उसकी संगति मत करना; वरन् ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना।" **1 कुरून्थियों 5:11**

उपयोग:
अपने आस–पास के लोगों को पहचानने के लिये एक समझदार हृदय पाने के लिये प्रार्थना करो।

दिन 10
मूर्ख के साथ समझदारी की बातें करने का प्रयत्न न करो

"*मूर्ख के सामने न बोलना, नहीं तो वह तेरे बुद्धि के वचनों को तुच्छ जेनेगा।*" *नीतिवचन* **23:9**

मूर्ख आपकी बुद्धि को न तो स्वीकार करेगा और न ही उसकी सराहना करेगा। यह सुअरों के सामने मोती फेंकने के समान है। आप सावधान रहें कि आपको अपने बहुमूल्य विचार किसके साथ साझा करना है।

मूर्ख ज्ञान की बातों का अर्थ नहीं समझता, वह इन बातों को समझना भी नहीं चाहता, और अपने निरूत्साही आत्मसंतुष्टता में वह ज्ञान की बातों का केवल अनादर ही करता है और कुछ नहीं।

उपयोग:

नीतिवचन 22:3, 27:12 चतुर मनुष्य विपत्ति को आते देखकर छिप जाता है; परन्तु भोले लोग आगे बढ़कर दण्ड भोगते हैं।

अधिक विवेकपूर्ण होने के लिये हमें अपने अन्दर क्या बदलाव लाना होगा?

दिन 11
कमज़ोर लोगों की सीमाओं को न छूना

“*पुराने सिवानों को न बढ़ाना, और न अनाथों के खेत में घुसना; क्योंकि उनका छुड़ानेवाला सामर्थी है; उसका मुकद्दमा तेरे संग वही लड़ेगा।*” *नीतिवचन* **23:10-11**

विधवाओं की तरह, परमेश्वर ने अनाथों, विदेशियों और गरीबों का विशेष ध्यान रखा। जो कमज़ोर और असाहय लोगों को परेशान करते हैं, उन लोगों से बदला लेने के लिये परमेश्वर ने स्वर्ग से आने का वादा किया था। ऐसे लोगों की अधिक से अधिक मदद करना ही ज्ञान और सच्चा धर्म है।

याकूब1:27 हमारे परमेश्वर और पिता की दृष्टि में शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है कि हम अनाथों और विधवाओं के दुख–तकलीफ में उनकी सुधि लें, और अपने आपको संसार से निष्कलंक रखें।

उपयोग:
एक अनाथ / विधवा के साथ मिलकर एक समय का भोजन करो।

दिन 12
हमेशा सीखने और बढ़ने के अवसर ढूँढते रहो

"अपना हृदय शिक्षा की ओर , और अपने कान ज्ञान की बातों की ओर लगाना।" नीतिवचन **23:12**

मनुष्य एक–दूसरे से बहुत अलग हैं। कुछ विजेता हैं; कुछ हारे हुए हैं। कुछ बुद्धिमान हैं; कुछ मूर्ख। मनुष्य ऐसे विकल्प चुनते हैं जिनकी उन्हें या तो कीमत चुकानी पड़ती है या फिर ज्ञान प्राप्त होता है। एक नेक और सदाचारी मनुष्य ज्ञान प्राप्त करने के लिये जीवन की दूसरी बातों का त्याग करता है।

जो व्यक्ति ज्ञान की खोज करता है, उसका जीवन सुखी और सफल होता है, क्योंकि वह संसार को सही रीति से समझता है, लाभदायक निर्णय लेता है, और दर्द और परेशानी से बचता है।

प्रत्येक दिन में 1,440 मिनिट होते हैं। आप कितना समय ज्ञान की खोज में लगाते हैं? आप कितना समय शिक्षणों का अनुसरण करने में लगाते हैं?

उपयोग:

इस नीतिवचन का निर्देश और ज्ञान सुनने के बाद आपका मन और आपके कान कितने चौकस हैं? आज आप क्या बदलाव करेंगे?

दिन 13
अनुशासन में देर न करो

"लड़के की ताड़ना न छोड़ना; क्योंकि यदि तू उसको छड़ी से मारे, तो वह न मरेगा। तू उसे छड़ी से मारकर उसका प्राण अधोलोक से बचाएगा।" नीतिवचन **23:13-14**

दुनिया यह मानती और विश्वास करती है कि उसके पास एक बेहतर विचार है–बच्चे जो करना चाहते हैं उन्हें वो करने दो, और स्वतंत्रता अपने आप उन्हें बुद्धिमान और अनुशासित होना सीखा देगी।

आपके परिवार, आपके चर्च और आपके देश का भविष्य परमेश्वर के प्रेरित करनेवाले और अचूक वचनों का बुद्धिमानी से उपयोग करने पर निर्भर है। वे जो इसका आनन्द उठाते और पालन करते हैं, आशीष पाएंगे। वे जो इसकी अवहेलना करते और इसे अस्वीकार करते हैं, उन्हें इसके परिणाम भुगतने होंगे, जैसे कि एक इमानदार व्यक्ति पहले से ही इसे स्पष्ट रूप से देख सकता है।

***"वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है। फिर भी जो उसकी सहते-सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।" इब्रानियों* 12:11**

उपयोग:
आपको जो भी अनुशासन / सुधार मिले हैं उन्हें याद करो और उनके लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो।

दिन 14
सही बात ही बोलो

“हे मेरे पुत्र, यदि तू बुद्धिमान हो, तो मेरा ही मन आनन्दित होगा। और जब तू सीधी बातें बोले, तब मेरा मन प्रसन्न होगा”
***नीतिवचन* 23:15-16**

अपने माता–पिता को अति आनन्दित करने सबसे आसान रास्ता है बुद्धिमान होना। यदि आप बुद्धिमान हों, तो शैतान और यह दुष्ट संसार हार जाता है।

यदि बुद्धि आपको ऊँचा उठाती है, तो परमेश्वर को प्रसन्न करती है, माता–पिता को प्रसन्न करती है और इससे आपके आस–पास के लोगों का लाभ पहुँचाती है, बुद्धि आपके लिये कितनी महत्वपूर्ण है? प्रत्येक दिन आपके विचारों में यही बात पहली और आखिरी होनी चाहिये।

अधिक बुद्धि प्राप्त करने के लिये आपको बाकी सभी मूर्खतापूर्ण या व्यर्थ की गतिविधियों को बन्द कर देना चाहिये। जीवन बहुत छोटा है; क्या आधा जीवन गुज़र जाने के बाद आप बुद्धिमान बनने का प्रयास करेंगे?

उपयोग:
जीवन बहुत छोटा है; और अधिक बुद्धिमान बनने के लिये आप क्या–क्या प्रयास करेंगे?

दिन 15
परमेश्वर का भय मानने में जोशिले बनो

"*तू पापियों के प्रति तेरे मन में ईर्ष्या न हो, परन्तु तू सदा यहोवा के भय बने रहना। निःसंदेह तेरे लिये एक अच्छा भविष्य है, और तेरी आशा न टूटेगी।" नीतिवचन* **23:17-18**

परमेश्वर का भय अति उत्तम भय है। हर पापी चाहे वह कितना भी धनवान या प्रसिद्ध क्यों न हो, मृत्यु पश्चात नरक में जाएगा। इसलिये मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य है, परमेश्वर का भय मानना।

उपासना के लिये, कठीन समयों के लिये, प्रार्थना के लिये, रविवार की आराधना के लिये या प्रभु–भोज के लिये परमेश्वर का भय मानना एक सही मानसिकता नहीं है, यह जीवनशैली, परिप्रेक्ष्य, विश्व दृष्टिकोण है कि, इसका पालन सच्चे मसीही हर पल और पूरे दिन करते हैं।

उपयोग:
भजनसंहिता 73 पढ़ो और उस पर मनन करो।

दिन 16
अपना मन सही मार्ग पर लगाओ

"हे मेरे पुत्र, मेरी बात ध्यान से सुन और बुद्धिमान बन; और अपना मन सुमार्ग पर लगा। तू न तो पियक्कड़ों के साथ और न अधिक मांस खानेवालों के साथ संगति रखना; क्योंकि पियक्कड़ और पेटू तो दरिद्र हो जाएँगे, और उनका नीन्द में रहना उन्हें चिथड़े पहनाएगा।"
नीतिवचन **23:19-21**

एक बुद्धिमान व्यक्ति जो जीवन में नेक और सदाचारी बनना चाहता है, वह पेटू और पियक्कड़ लोगों को अपना मित्र नहीं बनाएगा। वह जानता है कि बुद्धिमान मित्र चुनना उसकी अपनी सफलता के लिये आवश्यक है। वह शान्त और संयमी रहनेवाले पुरूषों और महिलाओं की खोज करेगा जो हर समय अनुशासित जीवन बिताते हैं।

धर्मी स्त्री/पुरूष ऐसी विकृत ज्यादतियों से बचते हैं, फिर चाहे इसके लिये उनको कितना भी अपमान/उपहास सहना पड़े, क्योंकि वे जानते हैं कि परमेश्वर ऐसे पापों का न्याय करने आ रहे हैं। जो लोग या भीड़ ऐसे पाप करते हैं उसके बुरे प्रभाव से बचने के लिये धर्मी स्त्री/पुरूष उस भीड़ या ऐसे लोगों का अस्वीकार करते हैं।

उपयोग:
जो लोग ऐसी आदतों से झूज रहे हैं उनके लिये प्रार्थना करो और उनसे मिलो।

दिन 17
अपने माता-पिता की बुद्धिमत्ता की बातों और सलाह को मानो

“*अपने पिता की सुनना जिसने तुझे उत्पन्न किया है, और जब तेरी माता बूढ़ी हो जाए तो उसे तुच्छ न जानना। सच्चाई को खरीद ले और उसे बेच मत; बुद्धि, शिक्षा, और समझ को कभी की प्राप्त कर। धर्मी का पिता बहुत मगन होगा; और जो बुद्धिमान पुत्र को जन्म देता है, वह उसमें अति आनन्दित हों, और तेरी जननी मगन रहे।*” *नीतिवचन* **23:22-25**

जब महान परमेश्वर ने आपको अस्तित्व में लाया तब आपसे या आपके माता-पिता से पूछकर ऐसा नहीं किया। उसने सभी परिस्थितियों के अपने सिद्ध ज्ञान और अपनी इस व्यवस्था से होने वाले संभावित परिणामों को ध्यान में रखते हुए आप तीनों के लिये एक अनदेखी योजना बनाई और उसे पूरा किया। परमेश्वर द्वारा चुने हुए अपने माता-पिता के प्रति नम्र बनो। उनकी आज्ञा का पालन करो। उनका आदर करो। उनसे प्रेम करो।

यदि आप माता-पिता हैं और आपके बच्चे आपका कम आदर करते या बिलकुल आदर नहीं करते हैं, तो अपने आप को स्वर्ग के परमेश्वर के आगे नम्र बनाओ और अपने पापमय भोग-विलास, लापरवाह अनियमितता, भूमिकाओं में उलटफेर, अत्याधिक आलोचना, या ऐसे वातावरण की आज्ञा जिसके कारण आपको प्यारे और आदरणीय माता-पिता होने का पद खोना पड़ा है; इन सभी बातों की कबूली करो।

उपयोग:

कुछ ऐसा करो कि आपके माता-पिता आनन्दित हों, यदि आपके माता-पिता नहीं हैं तो किसी बुज़ुर्ग को प्रसन्न करने के लिये कुछ करो।

दिन 18
अपनी कमज़ोरियों और संवेदनशीलताओं को जानो

"हे मेरे पुत्र, अपना मन मेरी ओर लगा, और तेरी दृष्टि मेरे चाल-चलन पर लगी रहे। वेश्वा तो एक गहरे गड्ढे के समान, और व्यभिचारिणी स्त्री एक संकरे कुएँ के समान होती है। वह डाकू के समान घात लगाती, और मनुष्यों में विश्वासघातियों की संख्या बढ़ाती है।" नीतिवचन **23:26-28**

पुरूषों और खासकर नवजवानों के लिये वेश्याएं और व्यभिचारिणी स्त्रियां सबसे बड़ा खतरा हैं। एक आकर्षक, साहसी और अनैतिक स्त्री उनकी सबसे खतरनाक दुश्मन होती है।

नवजवानों चरित्रहीन स्त्री से बातचीत और संगति करने से दूर रहो। आपकी ओर बढ़ने की उनकी कोशिशों को नाकाम करो। वे झूठी होती हैं। वे जो कुछ समय का सुख देते हैं, वह यहाँ और उसके बाद के लम्बे कष्टों की तुलना में कुछ भी नहीं है। वे एक गहरी खाई और संकरा गड्ढा हैं। आपको परमेश्वर का भय माननेवाली स्त्री से विवाह कर उसका और उससे उत्पन्न होनेवाले बच्चों का आनन्द उठाना चाहिये। जो विवाहित हैं उन्हें भी ऐसी बातों से सावधान रहना चाहिये।

उपयोग:
इस क्षेत्र में आप किन लालसाओं से झूज रहे हैं? छुटकारे के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करो।

दिन 19
अपनी आदतों के प्रति सावधान रहो

"कौन कहता है, हाय? कौन दु:ख में है? कौन झगड़ों में फँसा है? कौन शिकायतें करता है? कौन अकारण घायल है? कौन है जिसकी आँखें लाल हैं? वे जो देर तक दाखमधु पीते हैं, और जो मसाला मिली हुई मदिरा की खोज में रहते हैं। जब दाखमधु लाल दिखाई देता है, जब वह प्याले में लुभावना लगता है, तब उस पर दृष्टि न करना। अन्त में वह सर्प के समान डसता है, और करैत के समान काटता है। तेरी आँखें विचित्र वस्तुएँ देखेंगी और तेरे मन से उलटी-सीधी बातें निकलेंगी। तू समुद्र के बीच सोनेवाले के समान, या मस्तूल के सिरे पर लेटनेवाले के समान होगा। तू कहेगा, "उन्होंने मुझे मारा, पर मुझे पीड़ा नहीं हुई। उन्होंने मुझे पीटा, पर मुझे पता भी न चला। मैं कब होश में आऊँगा कि फिर से पीऊँ?" नीतिवचन **23:29-35**

- हाय तो मुसिबत है, और पियक्कड़पन बहुत सारी और हर प्रकार की मुसिबतें लाता है।
- शोक, कष्ट और पछतावा दु:ख है, और बहुत अधिक शराब उन्हें लाएगी।
- कलह/विवाद झगड़े और बहस हैं, और इन दोनों का कारण है बेहिसाब शराब पीना।
- बड़बड़ाना और शिकायत करना बदले हुए बोल हैं जिसका कोई मतलब नहीं रह जाता और पियक्कड़पन यह भी लाता है।

मसीहियों से कहा जाता है कि नशे के कारण मनोदशा में होनेवाली के बदलावों को अस्विकार करें और इसके बजाए पवित्र आत्मा से भरने का चुनाव करें। पवित्र आत्मा में कोई दंश या डंक नहीं है: इस पर विश्वास करने में आनन्द और शान्ति है: तुम्हारे मन में संगीत के मधुर धुन गुंजते हैं।

उपयोग:

आपके कुछ पसन्दीदा गीत गाओ।

दिन 20
दुष्टों की संगति की चाहत न रखना

"दुष्ट लोगों के प्रति ईर्ष्यालु न होना, और न उनकी संगति की चाहत रखना। क्योंकि उनके मन हिंसा की योजना बनाते हैं, और उनके मुँह दुष्टता की बातें बोलते हैं?" नीतिवचन **24:1-2**

दुष्ट मनुष्यों से ईर्ष्या करना अर्थात् उनके सुख और समृद्धि की इच्छा करना है, और यह पाप है। यह ऐसी सोच है कि पवित्र जीवन बिताना बहुत कठोर है। इसमें दुष्ट के साथ रहना और उनकी खुशियाँ साझा करना भी शामिल हैं। लेकिन ऐसे विचार उनके खाली जीवन की भ्रष्टता और आनेवाले न्याय के बारे में भूल जाते हैं, जब धर्मी को उसका प्रतिफल दिया जाएगा और दुष्टों का नाश होगा।

संसार विकृत और बदत्तर होती जा रही है। समाज में पीढ़ियों से लाभदायक नैतिक विचार नहीं रहे हैं। तो उनसे ईर्ष्या क्यों?

उपयोग:
संसार के कुछ ऐसे तरीके क्या हैं जो परमेश्वर के स्तर के विरूद्ध हैं? इसके माध्यम से प्रार्थना करो कि परमेश्वर आपके परिवार और मित्रों की रक्षा करें।

दिन 21
बुद्धि और समझ से अपना घर बनाओ

"घर बुद्धि से बनता है, और समझ के द्वारा वह स्थित रहता है; तु ज्ञान के द्वारा उसके कमरे सब प्रकार की बहुमूल्य और मनभावनी वस्तुओं से भर जाते हैं।" नीतिवचन **24:3-4**

एक समृद्ध और दीर्घकालीक परिवार, बुद्धि, समझ और ज्ञान से बनता है। कोई शॉर्टकट रास्ता नहीं है। कोई और विकल्प नहीं है। धर्मी पुरूष इस संसार में एक समृद्ध और धार्मिक परिवार छोड़ना चाहते हैं।

परमेश्वर की बुद्धि, परमेश्वर की समझ और परमेश्वर के ज्ञान के आशिषों से बना घर, आध्यात्मिक रूप में और सांसारिक रूप में बहुमूल्य और सुखद धन लाएगा। परमेश्वर का आशिष उस घर पर होता है, जो उसके बुद्धि चाह रखता और उसका आदर करता है।

उपयोग:
एक परिवार होने के नाते इन वचनों पर चर्चा और मनन करो।

दिन 22
भरोसेमन्द लोगों को पाने के लिये समय लगाओ

"*बुद्धिमान पुरूष सामर्थी होता है, और ज्ञानी पुरूष अपनी शक्ति बढ़ाता है। क्योंकि उचित सलाह से युद्ध लड़ा जाता है, और सलाहकारों की बहुतायत से विजय प्राप्त होती है।" नीतिवचन* **24:5-6**

यहाँ पर सामर्थ का अर्थ है, जीवन के हर क्षेत्र में, अच्छा ढूँढने और करने की क्षमता और बुराई को जानकर उसका विरोध करने की क्षमता। यह सामर्थ मनुष्य को बुद्धि के द्वारा मिलती है। ज्ञानी मनुष्य सामर्थ प्राप्त करता है।

एक बुद्धिमान व्यक्ति निर्णय लेने से पहले मामलों पर सावधानीपूर्वक विचार करना जानता है। वह जानता है कि दूसरों से मिली बुद्धिपूर्ण सलाह और सलाहकारों की बहुतायत उसे गम्भीर संकट से बचा सकते हैं।

उपयोग:
जिन सलाहकारों ने आपकी मदद की उनको याद करो और उनका और परमेश्वर का धन्यवाद करो।

दिन 23
बुद्धि, मूर्ख की पहुँच से परे है

"बुद्धि तो मूर्ख की पहुँच से परे है; सभा में उसके पास बोलने के लिये कुछ नहीं होता।" नीतिवचन **24:7**

बुद्धि एक अद्‍भुत चीज़ है और हर मनुष्य को इसे पाने की चाह रखना चाहिये। बुद्धि एक सबसे अनमोल रतन है, सभी सांसारिक सम्पत्ति से बढ़कर इसे खोजा और महत्व दिया जाना चाहिये।

बुद्धि के लिये नम्रता की आवश्यक्ता होती है – ताकि आप अपनी गलती स्वीकार कर सकें। इसके लिये सुधार की आवश्यक्ता है – जिसे आप दूसरों से सीखने के लिये तैयार रह सकें। इसके लिये साहस की आवश्वक्ता है – ताकि आप लोकप्रीय भ्रमों से हटकर सोच सकें।

मूर्ख ये नहीं कर सकते। इन बातों के लिये उनके मन में कोई जगह नहीं है, उनकी आँखें और उनकी कल्पनाएँ हर जगह भटकती रहती हैं। वे अपने ही विचारों से प्रेम करते हैं।

उपयोग:
जिन कमज़ोरियों से आप झूज रहे हैं, उनके लिये प्रार्थना करो।

दिन 24
बुराई की युक्ति करनेवाले और ठट्ठा करनेवाले न बनो

"जो बुराई की युक्ति करता है, उसे लोग षड्यंत्रकारी कहते हैं। मूर्खतापूर्ण योना बनाना पाप है, और ठट्ठा करनेवाले से लोग घृणा करते हैं।" नीतिवचन **24:8-9**

क्या आप किसी खतरनाक आदमी को पहचान सकते हैं। बुराई की योजना बनाना दिल और दिमाग़ में पाप की सक्रीय योजना करना है। यह, लालसा और कमज़ोरी के कारण पाप कर बैठने से भी बदत्तर है। एक बार ऐसे व्यक्ति का पता चलने पर उससे सावधान रहना चाहिये, क्योंकि ऐसा व्यक्ति शरारती – खतरनाक और हानीकारक होता है।

मूर्खतापूर्ण विचार परमेश्वर की नज़रों में पाप है। ठट्ठा करनेवाला सुधार और शिक्षकों से घृणा करता है, अच्छे चाल–चलनवाले उससे नफरत करते हैं, क्योंकि ऐसा व्यक्ति बहुत झगड़े पैदा करता है।

उपयोग:
क्या आप ऐसे खतरनाक लोगों को जानते हैं, उनके लिये प्रार्थना करो।

दिन 25
जो लोग मृत्यु की ओर घसीटे जा रहे हैं उन्हें बचा

"यदि तू विपत्ति के समय हार मान ले, तो तेरी शक्ति बहुत सीमित है। जो लोग मार डाले जाने के लिये घसीटे जाते हैं, उन्हें छुड़ा; जो घात होने को लड़खड़ाते हुए जा रहे हैं, उन्हें रोक। यदि तू कहे, देख, हम तो यह जानते नहीं थे, तो क्या मन का जाँचनेवाला इसे नहीं समझता? क्या तेरे प्राण की रक्षा करनेवाला यह नहीं जानता? क्या वह मनुष्य को उसके कार्य के अनुसार प्रतिफल न देगा?" नीतिवचन **24:10-12**

विपत्ति का दिन और मुसिबत का समय हर किसी पर आता है।अति धार्मिक और अति दुष्ट दोनों ही विपत्ति के दिनों का अनुभव करेंगे और यह उनके लिये एक परीक्षा होगी यह जानने के लिये कि ऐसे समयों में वे होश खो देंगे या लड़खड़ाएँगे की नहीं।

परमेश्वर मूर्ख से उसकी मूर्खता का उत्तर माँगेंगे, परन्तु वह लापरवाह से उसकी लापरवाही का हिसाब भी लेगा। परमेश्वर हर एक को उसके कर्मों के अनुसार प्रतिफल देगा।

उपयोग:

अपने जीवन के चुनौतिपूर्ण समयों को याद करो और उसमें से आपको छुड़ाने के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो।

दिन 26
बुद्धिमत्ता तेरे जीवन के लिये शहद के समान है

"हे मेरे पुत्र, तू मधु खा क्योंकि वह अच्छा है, हाँ, छत्ते से टपकनेवाला मधु तुझे मीठा लगेगा; और तू यह भी जान ले कि बुद्धि तेरे प्राण के लिये वैसी ही मीठी लगेगी। यदि तू उसे पा ले तो तेरा भविष्य अच्छा होगा और तेरी आशा न टूटेगी।" नीतिवचन **24:13-14**

भूखे आदमी को होश में लाने के लिये शहद अच्छा है। शहद मीठा लगता है और इसे खाने में मज़ा आता है। ज्ञान प्राप्त करना ऊर्जावान और आनन्ददायक है और फिर यह लाभदायक समृद्धि की ओर ले जाता है।

जैसे शरीर के लिये शहद मीठा और लाभदायक है वैसे ही आत्मा के लिये बुद्धि सुखद और लाभदायक है। बुद्धि उन लोगों के लिये महान प्रतिफल है जो इसे लागू करते और उन पर चलते हैं, परन्तु उनके लिये नहीं जो मात्र इसे ताकते, देखते या सुनते हैं।

उपयोग:
शहद जैसे मीठे उन पाँच वचनों को लिखो जिनका अनुभव आपने अपने जीवन में किया है।

दिन 27
ऐसे क्रूर व्यक्ति न बनो जो धर्मी पर घात लगाता है

"हे दुष्ट, तू धर्मी के निवास को लूटने के लिये घात न लगा, और उसके विश्रामस्थान को न उजाड़; क्योंकि धर्मी चाहे सात बार गिरे, फिर भी उठ खड़ा होगा; परन्तु दुष्ट लोग विपत्ति के समय गिर कर नष्ट हो जाते हैं।" नीतिवचन **24:15-16**

दुष्ट आदमी, सावधान रहो! धर्मी की शान्ति भंग कर उसे परेशान करने का षड्यंत्र मत रच, वर्ना परमेश्वर तुझे दण्ड देगा।

धर्मी मनुष्य, सांत्वना पाओ! परमेश्वर तेरे पक्ष में है और तेरे विरूद्ध हो रही हर बुराई को जानता है। तू यदि गिर भी जाए, तो परमेश्वर तुझे फिर से उठा लेगा।

परमेश्वर ने अच्छे लोगों को फूलों का बिस्तर देने का वादा नहीं किया है। सच्चाई यह है कि, अच्छे लोगों को सिद्ध बनाने के लिये परमेश्वर उसके जीवन में अक्सर आपदा लाते हैं। हालाँकि एक न्यायी व्यक्ति के जीवन में दुःख, मुसिबत आ सकते हैं, परन्तु प्रभु उन सबसे उसे छुटकारा दिलाएगा।

उपयोग:
परमेश्वर का भय माननेवाले व्यक्ति के साथ समय बिताओ। उनकी धार्मिक यात्रा और जिन चुनौतियों का उन्होंने सामना किया है उसे सुनो।

दिन 28
जब तेरा शत्रु गिरे तो आनन्दित न होना

"जब तेरा शत्रु गिरे तो तू आनन्दित न होना, और जब वह ठोकर खाए तो तेरा मन मगन न हो। कहीं ऐसा न हो कि यहोवा यह देखकर अप्रसन्न हो, और अपना क्रोध उस पर से हटा ले।" नीतिवचन **24:17-18**

यहाँ चरित्र की एक कड़ी परीक्षा होती है। आप परमेश्वर के बच्चे हो या नहीं उसका यहाँ एक मजबूत सबूत है। यहाँ धार्मिक्ता और ज्ञान का वास्तविक माप है। आप चाहें या न चाहें यहाँ आपके विश्वास के लिये एक चुनौति है। अब विचार करो। जब आपके शत्रु पर बुरा समय आता है, तो तब क्या आप खुश होते हैं?

आप अपने शत्रु से कैसा व्यवहार करते हैं, इस पर परमेश्वर की नज़र रहती है। जब उनके साथ कुछ बुरा होता है और उसके लिये आप खुश होते हैं, तो परमेश्वर उनकी मदद करेगा और संभवत: आपको दण्ड देगा। परमेश्वर अपने बच्चों की रक्षा उनके शत्रुओं को दण्ड देकर करते हैं, परन्तु यदि वह यह देख ले कि अपने शत्रुओं के साथ हो रहे बुराई को देखकर आप इतरा रहे हैं, तो वह उस दण्ड को समाप्त कर देगा।

उपयोग:
आपके जीवन में जो ऐसे लोग हैं जिनसे आपकी नहीं बनती, उनके लिये प्रार्थना करो।

दिन 29

दुष्ट लोगों को तुम्हें तकलीफ देने दो

"कुकर्मियों के कारण मत कुढ़, और न दुष्ट लोगों के प्रति ईर्ष्या रख; क्योंकि दुष्ट मनुष्य का कोई भविष्य नहीं , और दुष्टों का दीपक बुझ जाएगा।" नीतिवचन **24:19-20**

दुष्टों के चमक–धमकवाले जीवनों को देखकर बेचैन न हो। पापी समृद्ध होते प्रतीत होते हैं। वे खुश नज़र आते हैं। उन्हें लगता है कि वे पाप से बच निकलेंगे। लेकिन उनका अन्त निकट है। उनकी अस्थायी सफलता से ईर्ष्या न कर।

भजन संहिता* 37:7 *"यहोवा के सामने चुपचाप रह, और धीरज से उसकी प्रतीक्षा कर। उस मनुष्य के कारण न कुढ़ जिसके कार्य सफल होते हैं, और जा दुष्टता की युक्तियों को पूरा करता है।"

उपयोग:

भजन संहिता 37 पर मनन करो और अपने जीवन में उसका अनुरण करो।

दिन 30
प्रत्येक मानव अधिकारी के अधीन रहो

"हे मेरे पुत्र, यहोवा और राजा दोनों का भय मानना; और विद्रोह करनेवालों के साथ न मिलना, क्योंकि उन पर अचानक विपत्ति आ पड़ेगी, और दोनों की ओर से आनेवाले विनाश को कौन जानता है?"
***नीतिवचन* 24:21-22**

परमेश्वर की यह आज्ञा है कि, हम परमेश्वर का और अपने देश के ऊँचे पदवालों का भय मानें। वे एक–दूसरे के साथ जुड़े हैं, क्योंकि परमेश्वर ने ही तुम्हारे देश के अगुवों को यह अधिकार दिया है।

1 *पतरस* 2:13-14 *"प्रभु के लिये प्रत्येक मानवीय शासन-प्रबंधक के अधीन रहो: चाहे राजा के जो प्रधान है, या राज्यपालों के, जो कुकर्मियों को दण्ड देने और भले कार्य करनेवालों की सराहना के लिये उसके द्वारा भेजे हुए हैं।"*

उपयोग:
सरकार के लिये प्रार्थना करो। 1तिमुथियुस 2:1-2 अब मैं सबसे पहले यह आग्रह करता हूँ कि सब लोगों के लिए विनती, प्रार्थना, मध्यस्थता और धन्यवाद किए जाएँ, तथा राजाओं और सब अधिकारियों के लियए भी, ताकि हम पूर्ण भक्ति और सम्मान के साथ अमन और शान्ति का जीवन व्यतीत करें।